



Original Article

गिलिगडु में चित्रित वृद्धावस्था की समस्या: आधुनिक भारतीय समाज का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक

अध्ययन

प्रा. भागवत भगवान देवकाते

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

एस.एस.जी.एम. महाविद्यालय कोपरगाव

Manuscript ID: IJAAR-C130369
 ISSN: 2347-7075
 Impact Factor – 8.141

Volume - 13
 Issue - 3
 January – February 2026
 Pp. 357 - 363

Submitted: 04 Feb. 2026
 Revised: 15 Feb. 2026
 Accepted: 20 Feb. 2026
 Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:
 प्रा. भागवत भगवान देवकाते

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787200

DOI Link:
<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787200>



Creative Commons



सार:

हिंदी साहित्य की प्रमुख रचनाकार चित्रा मुद्रल के उपन्यास गिलिगडु के आधार पर आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धावस्था की समस्या का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। भारतीय संस्कृति में परंपरागत रूप से बुजुर्गों को अनुभव, ज्ञान और नैतिक मार्गदर्शन का प्रतीक माना गया है। संयुक्त परिवार व्यवस्था में उनका स्थान केंद्रीय था, किंतु प्राद्योगिककरण, नगरीकरण और उपभोक्तावाद के प्रभाव से पारिवारिक संरचना में व्यापक परिवर्तन आया है। परिणामस्वरूप वृद्धजन परिवार के केंद्र से हाशिए पर पहुँच गए हैं। उपन्यास के पात्र बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के माध्यम से लेखिका ने महानगरीय जीवन की संवेदनहीनता, पीढ़ीगत दूरी और आर्थिक निर्भरता से उत्पन्न त्रासदी को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। परिवार में उपस्थित होते हुए भी वृद्ध पात्र निर्णय-प्रक्रिया से बाहर कर दिए जाते हैं। उनकी आर्थिक निर्भरता उनके आत्मसम्मान को आहत करती है, जबकि संवादहीनता उन्हें मानसिक अकेलेपन और असुरक्षा की ओर धकेलती है। नई पीढ़ी की उपभोक्तावादी मानसिकता वृद्धों को अनुपयोगी समझने लगती है, जिससे उनका अस्तित्वबोध संकटग्रस्त हो जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित वृद्ध समस्या केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक संकट नहीं, बल्कि बदलती सामाजिक संरचना का परिणाम है। लेखिका ने इसे करुणा के स्तर से आगे बढ़ाकर सामाजिक यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया है। उपन्यास परिवार में संवाद की आवश्यकता, नैतिक मूल्यों के पुनर्स्थापन तथा वृद्धों की आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर संकेत करता है। इस प्रकार गिलिगडु आधुनिक समाज में वृद्धावस्था की त्रासदी का सशक्त दस्तावेज है, जो हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

मुख्य शब्द: वृद्धावस्था, पारिवारिक, विघटन, उपेक्षा, अकेलापन, आधुनिकता, सामाजिक यथार्थ

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. भागवत भगवान देवकाते. (2026). गिलिगडु में चित्रित वृद्धावस्था की समस्या: आधुनिक भारतीय समाज का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अध्ययन. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 357 - 363.
<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787200>



प्रस्तावना:

भारतीय समाज में परंपरागत रूप से बुजुर्गों को सम्मान, अनुभव और ज्ञान का प्रतीक माना गया है। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव' की संस्कृति से भारतीय समाज में सांस्कृतिक मूल्यों का आधार रहा है। संयुक्त परिवार व्यवस्था में बुजुर्ग व्यक्ति को सम्मान था वे परिवार के केंद्र में होते थे किंतु आधुनिक युग में इस परिस्थिति में तेजी से बदलाव हो रहा है। औद्योगीकरण, नगरीकरण और उपभोक्तावाद के प्रभाव से पारिवारिक संरचना में व्यापक परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवारों के विघटन, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों ने वृद्धों को परिवार के केंद्र से हाशिए पर लाकर खड़ा किया है। परिणामस्वरूप आज वृद्धजन परिवार में उपेक्षित होने के साथ साथ उन्हें परिवार के सदस्यों से असुरक्षित महसूस करने लगे हैं। आज हमारे युवाओं के मन में बुजुर्गों के प्रति आत्मीयता और सम्मान की भावना का न्हास होते जा रहा है। इस कारण वृद्धों की समाज में की समस्या तथा उनकी त्रासदी बढ़ती जा रही है। इन बुजुर्गों को हमारे समाज में कुछ घटक अपने स्वार्थ के लिए इनका इस्तेमाल कर रहे हैं। परिवार के कुछ सदस्यों की नजर उनके धन संपत्ति पर होती है इसका दर्शन समाज में मिल रहे उदाहरणों से होता है। समकालीन हिंदी उपन्यासों में इन वृद्धों की समस्या व्यापक रूप से चित्रित हुई है। गिलिगडु इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कृति है, जो वृद्धावस्था की त्रासदी को संवेदनशीलता के साथ सामने लाती है। यह उपन्यास न केवल एक परिवार या बुजुर्ग की कहानी नहीं है, बल्कि बदलते सामाजिक मूल्यों का दर्पण भी है। समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में यह समस्या एक सामाजिक यथार्थ के रूप में सामने आती है। गिलिगडु इसी संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। यह उपन्यास बदलते सामाजिक मूल्यों की आलोचनात्मक प्रस्तुति है इस उपन्यास में चित्रित

वृद्धसमस्या का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया गया है।

विषय विवेचन:

चित्रा मुद्गल समकालीन हिंदी साहित्य की सशक्त रचनाकार हैं। उन्होंने श्रमिक जीवन, स्त्री-समस्या, शहरी जीवन और सामाजिक विसंगतियों को अपने साहित्य का विषय बनाया है। गिलिगडु उनके महत्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है, जिसमें उन्होंने इक्कीसवीं सदी के बुजुर्गों की त्रासदी, नई पीढ़ी की बुजुर्गों के प्रति संवेदनहीनता आदि बातों का चित्रण किया है। साथ-साथ बदलते पारिवारिक मूल्यों का सटीक चित्रण करने में वे भूले नहीं हैं।

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में वृद्धों की समस्याओं को मार्मिकता के साथ विवेचित किया है। इस उपन्यास में तेरह दिनों के वृद्ध के जीवन को केंद्र में रखकर उनकी त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है। इन वृद्धों के जीवन को उन्होंने गैरमौजूदगी का नाम दिया है। वृद्धावस्था की समस्या को केंद्र में रखा गया। जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी की जीवन स्थितियों के माध्यम से महानगरीय जीवन की संवेदनहीनता को चित्रित किया गया है। दोनों अपने-अपने परिवारों में होते हुए भी उपेक्षित हैं। दोनों की संताने व्यस्त और स्वार्थग्रस्त हैं जिसमें बुजुर्गों का अस्तित्व बोझ बन जाता है। वह स्मृतियों, आत्मसम्मान और संवाद की तलाश में एक दूसरे का सहारा बनते हैं। उपन्यास यह प्रश्न उठाता है कि प्रगति और उपभोक्तावाद की दौड़ में क्या मनुष्य रिश्तों की उष्मा से खो रहा है। संवेदन शैली में लेखिका ने वृद्ध के मनोभाव उनकी स्मृतियों और आत्मसम्मान की लड़ाई को मार्मिकता से चित्रित किया है।



सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वृद्धों की समस्याएँ:

संयुक्त परिवार का विघटन से बुजुर्गों के जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होते हैं। संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की विशेषता रहा है। किंतु आधुनिक समय में यह व्यवस्था टूट रही है। उपन्यास में यह विघटन स्पष्ट दिखाई देता है। वृद्ध माता-पिता परिवार में होते हुए भी निर्णय-प्रक्रिया से बाहर कर दिए जाते हैं। समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे के अनुसार “भारतीय समाज में परिवार केवल जैविक इकाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण का केंद्र रहा है।”¹ गिलिगडु समकालीन भारतीय में घटित पारिवारिक परिवर्तनों का मार्मिक दस्तावेज है। उपन्यास में संयुक्त परिवार की विघटन को लेकर केवल सामाजिक घटना के रूप में नहीं बल्कि मानवीय त्रासदी के रूप में चित्रित किया है। बदलती जीवनशैली शहरीकरण और स्वार्थपरक दृष्टिकोण ने पारंपरिक संरचना को कमजोर किया है। यह विघटन केवल परिवार के टूटने तक सीमित नहीं बल्कि बुजुर्गों की और सुरक्षा अकेलेपन और सम्मान का ह्रास का कारण बताता है। विवेचित उपन्यास में इन बातों को विवश करता है। जब बाबू जसवंत सिंह के पोते मलय जन्मदिन अठाराह नवंबर को है और तब उनका जन्मदिन मैकडोनल्डन में अपने दोस्तों के साथ मनाने का ब्यौरा देता है। मगर अपने दादाजी को जन्मदिन में आने के लिए वह नापसंदी दर्शाता है। इससे बाबू जसवंत सिंह उदास होते हुए कहते हैं कि, “बच्चों की गलती नहीं है। उन्हें अपने तक सीमित रहना सिखाया जा रहा है। उन्हें समझाया जा रहा है कि उन्हें किसी की जरूरत नहीं। उन्होंने इसी के चलते मलय-निलय को कभी कोई खेल गली के बच्चों के साथ खेलने में उनकी कोई दिलचस्पी न होती। न अपने खेल में उन उत्सुक बच्चों को साझेदार बनाते। बुद्धिविकास की आड़ में बड़े खूबसूरती से बच्चों को संवेदनाच्युत किया जा रहा - इतना कि बच्चे कभी परिवार में ना लौट सके, न कभी अपना कोई

परिवार गढ़ सके।”² इससे यह कि जसवंत सिंह अपने एकांत को दूर करने के लिए कुछ अपने बेटा बहू और पोते के साथ आनंद मस्ती से खुश में रह के कुछ समय बिताऊं लेकिन यहाँ आने से उन्हें विपरीत समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उदास रहना पड़ता है। जसवंत सिंह जब कर्नल स्वामी की स्थिति से रूबरू होते हैं। जब परिवार के प्रति उनका सहा जो मोहमा वह भंग हो जाता है। जब कर्नल स्वामी अपनी बेटी बेटा बहू की अपेक्षा कानपुर में अपने घर में रहने वाले नौकरानी और उनके बच्चों में उमड़ता है और अपने मरने के बाद मुखानी देने की जिम्मेदारी कि उन्हें सौंपता है। यह बात जब मिसेज श्रीवास्तव बाबू जसवंत सिंह से बताती है। जसवंत सिंह की कर्नल स्वामी से बहुत दिनों से भेंट नहीं हो पाई थीं। तो वह उनसे मिलने के लिए उनके सोसाइटी में जाते हैं और जब भी वहाँ के पड़ोसियों से पूछताछ करते हैं। तब उनसे मिसेज श्रीवास्तव कहती हैं कि, “अपोलो ले जाते हुए रास्ते में उन्हें दूसरा सीवियर अटैक हुआ और उसे अटैक को भाई साहब झेल नहीं पाए.... तब जसवंत सिंह उसे पूछते हैं घर पर बहुएं, बच्चे सब कहां गए हुए थे? तब मिसेज श्रीवास्तव कहती है कौन से बहू-बच्चे !! मिसेज श्रीवास्तव को बाबू जसवंत सिंह के प्रश्नने भौंक कर दिया। माधवी, अनुश्री, गिलीगडु... बेटा श्रीनारायण... पिछले आठ वर्षों से हमने भाई साहब को अकेली रहते देखा है। क्या कह रही है मोहतरमा चमक का रोग उन्हें अभी से ही नहीं शुरू हो गया। पत्नी के मौत के बाद कर्नल स्वामी निपट अकेले हो गए थे। तीनों बेटों ने तब तक नई नौकरियां पकड़ कर। नए भविष्य की तलाश में नए शहरों में अपना डेरा बना लिया था। छूछे वादों के अंबारपर उन्हें बैठाए हुए थे”³ इस प्रकार बच्चे अपनी भविष्य के निर्वाह के खातिर अपने बुजुर्गों माता पिता को अकेले छोड़ कर अपने परिवार से दूर जाते हैं तो कर्नल स्वामी जैसे बुजुर्गों को विविध समस्याओं का सामना करना



पड़ता है। जब जसवंत सिंह कर्नल के घर पहुंचते हैं। तब उन्हें कर्नल स्वामी की स्थितियों का सामना होता है तब उनके पैरोंतले की जमीन कैसे खिसक जाती है। कर्नल स्वामी की पड़ोसी मिसेज श्रीवास्तव कर्नल स्वामी की स्थिति के बारे में जसवंत सिंह से कहती है कि, “ऐसे कसाई औलादे से तो आदमी निपुणता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं। मिसेज श्रीवास्तव का गला भरा आया।”⁴ परिवार में बुजुर्गों को ताने दिए जाते हैं जिस वजह वे अपने ही परिवार से मानसिकता से दूर हो जा सकते हैं जैसे कि, “बाबू जसवंत सिंह को ताना चुभ गया। क्यों वे बार-बार इस घर को अपना घर समझने की भूल कर बैठे हैं, जबकि उन्हें दासियों बार, दासियों तरह से समझाया जा चुका है कि वह अपने काम से काम तक सीमित रहे।”⁵ इस प्रकार परिवार के सदस्यों ऐसे कृत्यों के कारण वृद्धों को दुख होता है और वे उदास होते हैं। इस वजह से उन्हें यह अपना घर भी पराया घर लगता है। जैसे की कर्नल स्वामी कहते हैं कि, “दरअसल यह और कुछ नहीं है, मिस्टर सिंह-बूढ़ों की शासन न कर पाने की कुंठा है। अब छोड़ो, राजपाठ कर लिया जितना करना था। घर की दीवारें जब तक अपनी मिल्कीयत बनी रहती है, औरों का घर नहीं बन पाती। चलो छोड़ दिया।”⁶ भारतीय समाज की संस्कृति में ‘मातृदेवो भव, पितृदेवो भव’ की परंपरा रही है। परन्तु प्रस्तुत उपन्यास में इन मूल्यों का क्षरण होता दिखाई देता है। आधुनिक शिक्षा या विचारों के प्रभाववश पारिवारिक मूल्यों की दुरावस्था देखने को मिलती है।

वृद्धावस्था में बुजुर्गों के आर्थिक सपन्नता के साधन सीमित हो जाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के वृद्ध पात्र अपने बच्चों कुछ प्रमाण से निर्भर हैं, जिससे उनका आत्मसम्मान आहत होता है। आर्थिक निर्भरता बुजुर्गों को अपमानित और असुरक्षितता महसूस कराती है। बाबू जसवंत सिंह के जूते घीस

घीसकर पुराने हो चुके हैं। उनके बेटे नरेंद्र को उनके जूते देखने ही फुर्सत नहीं है। एक दिन उनकी नजर भी उन जो जूतों पर पड़ती है। मगर पिताजी के जूते पर खर्च किए पैसे पर फिजूल खर्चों का करार करता है जैसे कि, “पैसों की बात नहीं चलाई। यह सोचकर कि डिब्बे पर मूल्य लिखा रहता है। कल सुबह सैर से पहले लिफाफा बना लेंगे। नरेंद्र की नजर भी उनकी चप्पलों पर पड़ती होगी। यह भी जानता है कि टॉमी जैसे उत्पाती के साथ टहलना कम जोखिम भरा नहीं। जूते दिलाने की सुध नहीं आई उसे? आती तो क्या वे पाव की बड़ी हड्डी की टीस ओढ़ बैठे रहते! आँखों में भरभराहट की धुंध परस आई.....अपने जमाने में कपड़ों और जूते से लेकर खासे नक्शेबाज रही है वो वह जूतों लेकर विशेष। नरेंद्र को उनका ही शौक पैसों का अपव्यय लगता।”⁷ इस समस्या से जूझ रहे बाबू जसवंत सिंह को उनके मित्र कर्नल स्वामी जूते लेकर आते हैं। इस प्रकार लेखक ने वृद्धावस्था की आर्थिक समस्या को संवेदनशील और यथार्थ चित्रण किया है। इन्हें केवल पैसों की कमी नहीं है। बल्कि सम्मान आत्मनिर्भरता और मानवीय संबंधों के टूटने की समस्या है। आधुनिक शहरी जीवन और बदलती पारिवारिक संरचना के बीच बुजुर्गों को इस प्रकार आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यह बात सोचनीय है। परिवार के कुछ सदस्यों की नजर बुजुर्गों के पैसों पर होती है। कुछ स्वार्थी मतलबी परिवार के सदस्य वृद्धों के पैसों को हड़प कर लेते हैं। इसपर उपन्यास का वृद्ध पात्र व्यंग्यात्मक कहते हैं कि, “बाबू जसवंत सिंह को ऐसे में समझ में नहीं आता कि फिर वे लोग उनके घर, उनके बचतखातों को अपना कैसे समझ रहे और वह उसे पर मलिकाना हक जाता रहे?”⁸ आधुनिक समाज में भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राथमिकता दी जाती है। वृद्धों को अनुपयोगी समझा जाता है क्योंकि वे आर्थिक उत्पादकता में



योगदान नहीं दे पाते। गिलिगडु में यह मानसिकता तीखे व्यंग्य के साथ प्रस्तुत हुई है।

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में वृद्धों की समस्या:

गिलिगडु इस उपन्यास में चित्रित वृद्ध मानसिक रूप से समस्याग्रस्त है। यह उपन्यास बुजुर्गों के मानसिक निरीहता, असुरक्षिता का बोध कराता है, समाज तथा अपने परिवार के सदस्यों के मानसिक आधाररूपी संरक्षण की आवश्यकता बुजुर्गों को होती है। प्रस्तुत उपन्यास के वृद्ध पात्र भी उसी प्रकार असहाय और संरक्षणहीन प्रतीत होते हैं। लेखिका वृद्धावस्था की स्थिति तथा मनोवैज्ञानिक पीड़ा को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त करते हुए प्रतीक के माध्यम से रूपायित करती हैं जैसे कि “बुढ़ापा जैसे देह पर नहीं, आत्मा पर उतर आता है और तब मनुष्य स्वयं को घर के कोने में रखी अनुपयोगी वस्तु जैसा महसूस करने लगता है।” यह उद्धरण वृद्धावस्था की मनोवैज्ञानिक पीड़ा को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त करता है। प्रस्तुत उपन्यास केवल वृद्ध की कथा नहीं है। तो वह मानसिक संसार के पड़ताल है। जब अपेक्षा और सुरक्षित अकेलापन अस्मिता संकट और अस्तित्व बहुत जटिल मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ एक साथ सक्रिय होती हैं तब असंतोष निर्माण होता है। आधुनिक परिवार व्यवस्था में परिवर्तन के कारण बुजुर्गों की मानसिक सामाजिक और भावनात्मक संघर्ष से जूझ रहे हैं। मनोविज्ञानी के अनुसार यदि व्यक्ति अपने जीवन से संतुष्ट नहीं होता तब उसमें निराशा, हताशा की भावना निर्माण होती है। और यह भावनात्मक प्रक्रिया वृद्ध के मन में जल्दी उत्पन्न होती है। इस उपन्यास के वृद्ध पात्रों में इसी कारणवश असंतोष में दिखाई देता है। जब अपने बेटे नरेंद्र को आम्मा घर से बनाकर कक्का के हाथों छुपा कर शक्करपारे, कटह और अचार भिजवा देती थी। लेकिन उसकी मटकी गेट के बहार फेंक दिए जाते

थे। यह सुनकर जसवंत सिंह हाथप्रभ रह गए। इस बात को अंकित करते हुए लेखक का लिखती है कि, “उन्होंने क्या सोचकर, किसलिए सख्ती की थी बच्चों पर। तब उनके लिए समझ न पाना स्वाभाविकता था। मगर एन.टी.पी.सी के चीफ इंजीनियर मि. नरेंद्र सिंह कुशवाहा के मन के कोने में दुबके बैठे असंतोष को मात्र कुंठा के और किस रूप में परिभाषित किया जाए?”⁹ बाबू जसवंत सिंह अपने बेटे को अपने कष्ट सहकर इंजीनियर बनाया था। लेकिन जब वृद्ध अवस्था में अपने बेटे की उन्हें जरूरत होती है लेकिन तब बेटा उन्हें ज्यादा समय नहीं देता है। तब बाबू जसवंत सिंह स्मरण में आता है कि “नरेंद्र को यह स्मरण नहीं कि उसकी इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए बाबू जसवंत सिंह ने अपनी भविष्य निधि की रकम तोड़ दी। बिना किसी दुविधा के!! यह गलत नहीं कि उसे होस्टल में रखने के लिए उन्हें कितनी मशक्कत करनी पड़ी। नौकरी में भ्रष्ट हुए नहीं की घूसखोरी को ऊपरी आमदनी का जरिया बना, अपने अन्य सहयोगियों के तर्ज पर कष्टों से मुक्ति हो लेते !!”¹⁰ इस प्रकार आपने बेटे के प्रति का असंतोष व्यक्त करते हैं। यदि मैं मेरे अपने पिता के कर्तव्य से पीछे हटता तो क्या होता? यह बात बेटे को समझ में नहीं आती। प्रस्तुत उपन्यास में कर्नल स्वामी को तीनों बेटे थे। वे उनके पैसों के लालची थे। जिसमें दो बेटे उनकी ही पैसों से फ्लैट लेते हैं। किंतु वहाँ पिताजी को जगह मिलना असंभव सा लगता है। उनका बड़ा बेटा उन्हें पैसों के खातिर गला दबाकर मारता है। इस प्रकार चित्रित उपन्यास में वृद्धों के मानसिकता का चित्रण किया है।

उपन्यास के वृद्ध पात्र मानसिक रूप से अत्यंत अकेले पड़े हैं। इसका प्रमुख कारण है परिवार में संवाद का अभाव है। उनकी बातें सुनने वाला कोई नहीं। यह स्थिति उन्हें अवसाद की ओर ले जाती है। बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद और अपने दोस्त की मृत्यु के बाद अकेलेपन को महसूस



करते हैं। इस कारण वह बीमारी के शिकार हो जाते हैं। और इस बीमारी से छुटकारा पाने के लिए या मानसिक आधार पाने हेतु अपने बेटे के यहाँ दिल्ली जाते हैं। मगर नरेंद्र को अपने पिता के प्रति आदरता, प्रेम, आत्मीयता का कोई भाव नहीं है। यह देखकर बाबू जसवंत सिंह मानसिक रूप से टूट जाते हैं। वहाँ उन्हें कदम कदम पर खुद को अपमानित महसूस करते हैं। बात-बात पर टोका जाता है रहने के लिए भी उन्हें रूम में जगह नहीं दी जाती है। अपने बेटे की अपने पिता के प्रति क्री उपेक्षा को देखकर अपने बेटे को जसवंत सिंह कहते हैं कि, “तुम कभी बूढ़े नहीं होंगे नरेन्द्र?”¹¹ प्रस्तुत उपन्यास में वृद्धावस्था का अकेलापन यह व्यक्तिगत समस्या नहीं यह समाज की संरचना के परिवर्तन के कारण उत्पन्न हो गई समस्या है। बुजुर्गों को केवल भौतिक सुविधाओं की आवश्यकता नहीं बल्कि सम्मान, संवाद, आत्मीयता की आवश्यकता है। इसके बिना वे स्वयं को अकेलापन महसूस करते हैं। आधुनिक की इस दौर में हम अपने संबंध और मानवीय मूल्यों को खो रहे हैं। बाबू जसवंत सिंह जब अपने बेटे के घर दिल्ली जाते हैं। तब अपनी अवस्था को व्यक्त करते हुए वह कहते हैं कि, “इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं एक टॉमी दूसरा अवकाश-प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह की स्थिति निस्संदेह उनकी बनिसबत मजबूत है। उसकी इच्छा अनिच्छा की परवाह में बिछा रहता है पूरा घर। उसके लिए किसी को बिछे रहना जरूरी नहीं लगता।”¹² जब बच्चों द्वारा बार-बार उपेक्षा की जाती है, तो वृद्धों का आत्मसम्मान टूट जाता है। वे स्वयं को अनावश्यक और बोझ समझने लगते हैं। वृद्ध व्यक्ति स्वयं को निरर्थक समझने लगता है। उन्हें यह भय सताता रहता है कि कहीं उन्हें घर से निकाल न दिया जाए या वृद्धाश्रम न भेज दिया जाए। यह असुरक्षा उनकी मानसिक शांति छीन लेती है जैसे कि, “कल सुबह ही बाबू जसवंत सिंह को आभास हो गया था कि शालू

द्वारा दी गई सूचना के मानसिक आघात से उनके लिए उबर पाना आसान नहीं। घंटों वे निष्पन्द पड़े रहे थे। चोट पर चोटा एक तो कर्नल स्वामी की अनुपस्थिति उन्हें लगातार अस्तिरचित बनाए हुए हैं। ऊपर से उन्हें वनवास देने का अपनी ही औलादों उनका षड्यंत्र?”¹³ लेखिका यह प्रश्न उठाती हैं कि यदि परिवार ही वृद्धों के लिए सुरक्षित स्थान नहीं रहेगा, तो समाज का नैतिक ढांचा कैसे बच पाएगा? उपन्यास केवल समस्या का चित्रण नहीं करता, बल्कि संकेत देता है कि परिवार के सदस्यों के बीच संवाद की आवश्यकता है। वृद्धों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की परिवार की योजनाएँ होनी चाहिए। सामाजिक स्तर पर वृद्धाश्रम अंतिम विकल्प होंगे पर प्राथमिक समाधान नहीं। शिक्षा के माध्यम से समाज से नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन होना आवश्यक है।

निष्कर्ष:

गिलिगडु यह उपन्यास आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धावस्था की त्रासदी का सशक्त दस्तावेज है। चित्रा मुद्गलजी ने अत्यंत संवेदनशीलता के साथ वृद्ध की समस्या मूलकता दिखायी है। आर्थिक प्रगति और आधुनिकता के बीच मानवीय संबंध किस प्रकार कमजोर होते जा रहे हैं इसका भी यथार्थ चित्रण किया है। वृद्ध की समस्या केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि वह एक सामाजिक समस्या है। यदि परिवार और समाज समय रहते नहीं चलते तो आने वाली पीढ़ियाँ भी इसी संकट का सामना करना पड़ेगा। गिलिगडु न केवल एक उपन्यास है, बल्कि सामाजिक चेतना तथा वृद्ध संवेदना का दस्तावेज है जो हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। इस उपन्यास बारे में डॉ. अर्चना मिश्रा लिखते हैं कि, “गिलिगडु उपन्यास चित्राजी का आकार में छोटा परंतु संवेदनशीलता में कहीं गहरा उपन्यास है।



इस उपन्यास में सेवानिवृत्त बुजुर्ग का एक रेखीय कहानी नहीं
जीवन के रंग बहू आयामी रूपों में उभर आये हैं।”14

6. वही पृ.92

7. वही पृ.19

8. वही पृ.92

9. वही पृ.40

10. वही पृ.41

11. वही पृ.29

12. वही पृ.96

13. वही पृ. 102

14. डॉ.अर्चना मिश्रा, “चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग
चिंतन” प्रकाशन कानपुर पृ. 36

संदर्भ सूची:

1. श्यामाचरण दुबे — भारतीय समाज, अनु. वंदना
मिश्रा, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया पृ.48
2. चित्रा मुद्गल — गिलीगडू, सामायिक प्रकाशन नई
दिल्ली पृ.34
3. वही पृ.136
4. वही पृ.138
5. वही पृ.92